अवलोकित

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'अ' (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर | केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर | नोट—परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना

उत्तर-1

(क) (iii) सिंधु नदी

(ख) (ii) जैन धर्म

(ग) (i) ओडिशा

(घ) (ii) विनय पिटक

(ङ) (ii) मौ० मुहम्मद बिन तुगलक

(च) (iv) लार्ड कार्नवालिस

(छ) (iv) विजयनगर साम्राज्य

(ज) (iii) सुभद्रा कुमारी चौहान

(झ) (i) A और R सही है तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(अ) (i) A और R दोनों सही है R, A की सही व्याख्या करता है।

उत्तर-2

सिंधु घाटी सभ्यता में तांबे के साक्ष्य खेतड़ी (राजस्थान) से प्राप्त हुए

उत्तर-3

'सहायक संधि लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1798 मे तैयार की गयी एक व्यवस्था थी" यह कथन असत्य है।

उत्तर-4

मीराबाई के गुरु का नाम संत रविदास है।

उत्तर-5

प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक 'ट्रेवल्स इन

द मुगल एम्पायर' - फ्रांस्वा बर्नियर ने लिखी है।

उत्तर-6

खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व अली बंधु (शौकत अली, मौ॰ अली) ने किया।

उत्तर-7

'प्रयाग प्रशस्ति' की रचना सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने संस्कृत में की थी।

उत्तर-8 x

बहिर्विवाह पद्धति :-

~~ऐसी विवाह पद्धति जिसमे एक पति की कई पत्नियाँ और एक पत्नि के कई पति होते है। जैसे - दशरथ की कई रानियाँ~~ x

जिसमे गोत्र के बाहर विवाह होता है।

उत्तर-9

'अमर-नायक' प्रणाली :-

विजयनगर साम्राज्य के समय राय अर्थात राजा सेना प्रबंधन हेतु एक सेना कमांडर की नियुक्ति करता था। उस सेना कमांडर को अमरनायक कहा जाता है। राय अमरनायकों को भूमि का एक भाग देता था जिसे अमरम कहा जाता था और इस व्यवस्था को अमरनायक प्रणाली कहा गया।

उत्तर-10

जलियाँवाला बाग हत्याकांड :-

13 अप्रैल 1919 को पंजाब के अमृतसर में जलियाँवाला बाग में वैशाखी के दिन कुछ लोग रौलेट एक्ट जिसे काला कानून कहा जाता है उसके विरोध में इकट्ठे हुए उसी समय अंग्रेजों ने मार्शल लॉ लागू कर रखा था जिसके

तहत कोई भी समूह में खड़ा नहीं हो सकता जैसे ही यह बात जनरल डायर को पता चली उसने बाग के एकमात्र दरवाजें पर खड़े होकर गोलियाँ चलवाईं जिसमे निहत्थी जनता मारी गई और घायल हुई। इसे ही जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से जाना जाता है।

उत्तर - 11

राष्ट्रीय आंदोलन मे समाचार पत्रो की भूमिका :-

राष्ट्रीय आंदोलन मे आंदोलन कर्ताओं, अंग्रेजो की रणनीति महिला, बच्चो सभी की स्थिति को समाचार पत्रों मे दिखाया जाता है। कुछ समाचार पत्र उल्लेखनीय है जैसे पंजाब केसरी, यंग इण्डिया आदि जिसमे गांधी की भूमिका को दिखाया गया है।

उत्तर-12

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना की विशेषता :-

भूमिका :-
हड़प्पा सभ्यता विश्व की सबसे पुरानी नगरीकृत सभ्यता है इसकी खोज 1921 में जॉर्न मार्शल के नेतृत्व में दयाराम साहनी ने की। हड़प्पा सभ्यता अपने नगर नियोजन जल निकास प्रणाली ग्रिड पद्धति, लिपि, मुहरों आदि के बारे में प्रसिद्ध है।

→ हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना की विशेषता इस प्रकार है -

1. **बास्तियाँ :-**
हड़प्पा सभ्यता के सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ो को दो बास्तियों में विभाजित किया गया था। एक ऊँचा परंतु छोटा जिसे दुर्ग कहा गया एक नीचे परंतु बड़ा जिसे निचला शहर का नाम दिया गया था। दुर्ग को किलेबंद कर निचले शहर

से अलग किया गया था।

2. <u>ग्रिड पद्धति</u> :-

हड़प्पा सभ्यता में सड़कों और गलियों को ग्रिड पद्धति में बनाया गया था यहाँ सड़के और गलियां एक दूसरे को समकोण पर काटती है और 90° का कोण बनाती है।

3. <u>विशाल स्नानागार</u> :-

हड़प्पा सभ्यता में विशाल स्नानागार मिला है जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई क्रमश: 40, 25, 7 फुट है। इसका निर्माण बड़े सुनियोजित ढंग से किया गया था दक्षिण - उत्तर में सीढ़ियां और साधु के कक्ष बने हुए थे यह सामूहिक स्नान के काम आता था।

4. <u>आवास</u> :-

हड़प्पा सभ्यता में गलियो के साथ-साथ नालियों और उनके बगल में आवासों का निर्माण किया गया था।

5. <u>जल निकास प्रणाली</u> :-

हड़प्पा सभ्यता की जल निकास प्रणाली उत्कृष्ट थी।

P.T.O. →

घर की नालियों को सड़क की नालियों से जोड़ा गया था ताकि घरों और नगरों का गंदा पानी नगर के ~~बहार~~ बाहर जा सकें।

उत्तर - 13

" बन्धुत्व एवं विवाह संबंधी ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नही होता था। "

ब्राह्मणीय नियम :-

ब्राह्मणीय नियमो के अंतर्गत वे नियम है जिसमे अपनी ही गौत्र और जाति मे विवाह करना, बान्धव - बन्धु के साथ (रक्त संबंधी) प्रेम पूर्वक रहना आदि।

परंतु आपातकाल स्थितियो मे इन नियम मान्य नही रहते है जिनके उदाहरण इस प्रकार है -

बन्धुत्व :-

बन्धुत्व अर्थात भाई - बहन। समाज मे इन रिश्तों का अर्थ सभी अलग - अलग रुपो मे समझते है जैसे समाज के

कुछ लोग भाई बहन (चचेरे) को रक्त संबंधी मानते है परन्तु कुछ इन संबंधो को नैसर्गिक मानते है।

भाई-बन्धु को सुख-दुख का साथी बताया गया है जो आपस में मिलजुलकर खुशी से रहते है परंतु महाभारत में कौरव और पाण्डव भी चचेरे भाई थे परंतु दोनो के मध्य युद्ध दिखाया गया। यह युद्ध संपत्ति को लेकर था।

इसीलिए कहा गया है कि बन्धुत्व के संबंध में ब्राह्मणीय नियमों का अनुसरण नही होता है।

विवाह :

विवाह अपनी जाति मे विवाह करना शुरू से ही परंपरा रही है। विवाह के संबंध मे गोत्रो का नियम भी सर्वमान्य है।

- एक ही गोत्र के लोग आपस मे विवाह नहीं कर सकते है।
- विवाह के बाद पिता के गोत्र के स्थान पर पति का गोत्र मानना पड़ता है।

परंतु कुछ अपवाद निम्नलिखित है जो इन नियमों का अनुसरण

P.T.O →

नहीं करते जैसे - गौतमी पुत्र सिरी सातकर्णी - जिनका गोत्र उनकी माँ के नाम से चला।

उत्तर-14

अल - बिरुनी :-

अल - बिरुनी का जन्म 973 ई. पू. में आधुनिक उज्बेकिस्तान के ख्वारिज्म में हुआ था। अल - बिरुनी ने किताब-उल-हिन्द लिखी जिसमें भारत की जाति प्रथा, रीति रिवाज, परंपराओं आदि का उल्लेख किया है।

जाति प्रथा के संबंध में अल-बिरुनी के विचार :-

अल - बिरुनी ने देखा कि भारत में भी चार वर्ण निम्नलिखित है :-

- **ब्राह्मण** :-

ब्राह्मण संपूर्ण मानव जाति में उच्च समझे जाते थे। दान शिक्षा आदि से संबंधित कार्य

करते थे । इनका सर्जन ब्रह्म के सिर से हुआ है ।

- **क्षत्रिय** :-
  क्षत्रियों का सर्जन ब्रह्म के कंधों से हुआ है जिसका कार्य युध्द करना था ।

- **वैश्य** :-
  वैश्यों का सर्जन ब्रह्म की जंघाओं से हुआ था जिनका कार्य शिल्पकार या छोटे - मोटे व्यापार करना था ।

- **शूद्र** :-
  शूद्रो का सर्जन ब्रह्म के पैरों से हुआ है ये निम्न समझे जाने वाले कार्य करते थे ।

अलबिरूनी लिखता है कि फारस मे भी चार वर्ण थे परंतु इनसे भिन्न थे -

1. घुड़सवार और शासक वर्ग
2. भिक्षु
3. आनुष्ठानिक पुरोहित
4. खगोलशास्त्री, वैज्ञानिक और चिकित्सक

- अलबिरूनी लिखता है कि मुसलमानों में सभी को समान समझा जाता था केवल भिन्नताएँ धार्मिक पालन के आधार पर थीं

- अलबिरूनी ने अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार किया। उनका कहना था कि प्रत्येक वह वस्तु जो अपनी पवित्रता खो चुकी है और पवित्रता पाने का प्रयास करती है तो वह इसमे सफल होती है।

उत्तर - 15

महानवमी डिब्बा :- विजयनगर साम्राज्य की स्थापत्य कला में महानवमी डिब्बा प्रसिद्ध हैं। यह 11000 फीट आधार और 40 फीट लम्बा है। इसमें कई कक्ष हैं एक कक्ष राजा के कपड़ों के लिए उल्लेखनीय है। यह एक ऐसा मंच है जिसे विजय के भवन की संज्ञा दी जाती है।

महानवमी डिब्बे का अनुष्ठानो मे महत्व :

1. महानवमी डिब्बा अनुष्ठानो के लिए महत्वपूर्ण है महानवमी त्योहार पर राजा अपनी शक्ति, प्रदर्शन और वैभव के लिए इस मंच का प्रयोग करता था। यही वो मंच है जहाँ राजा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

2. महानवमी डिब्बा - मंच पर राजा महानवमी के दिन पशु बलि नृत्य, युद्ध, का प्रदर्शन करते थे जो इन सामूहिक आनुष्ठानों का महत्वपूर्ण अंग था।

3. राजा (राय) इस मंच पर अपने सैनिको का निरीक्षण भी करता था। एवं पुराने सैनिको को पदच्युत एवं नए सैनिको की पदोन्नति भी इसी मंच पर होती थी।

4. सैनिक अपने राजा के लिए भेंट लाते और सम्मान व वफादारी प्रकट करने के लिए

PTO

महानवमी डिब्बे पर आते और राजा को उपहार, भेंट प्रस्तुत करते थे ।

उत्तर -16

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती :-

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती जो गरीब नवाज के नाम से भी प्रसिद्ध है इनका जन्म 12 वी शताब्दी में हुआ था । ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भारत में पृथ्वीराज चौहान के शासन में आए थे । ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का संबंध चिश्ती सिलसिले से है । चिश्ती सिलसिले के संस्थापक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ही है जिनकी दरगाह राजस्थान के अजमेर में है । प्रति वर्ष ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती को मानने वाले इनके दरगाह पर जाते है और आशीर्वाद लेते है । ख्वाजा मुइनुद्दीन ने हिंदू - मुस्लिमों में एकता स्थापित की ।

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का महत्व :

1. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती को गरीब अपनी सरकार मानते है और उनकी गरीबी को दूर करने वाला समझते है इसीलिए ख्वाजा जी गरीब नवाज के नाम से प्रसिद्ध है ।

2. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के जन्म के 6 वे दिन अर्थात छठी शरीफ को अजमेर (राजस्थान) उनकी दरगाह पर मेला लगता है और हजारो अनुयायी उनकी दरगाह पर आशीर्वाद हेतु आते है ।

3. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर लोग अपनी इच्छा प्राप्ति हेतु मन्नत मांगते है और पूरी होने पर दरगाह मे चादर और फूल के साथ उपास्थित होते है ।

4. ख्वाजा मुइनुद्दीन हिंदु - मुस्लिम एकता के पक्षधर है । उनकी दरगाह पर न केवल मुस्लिमो का आना जाना होता है अपितु हिंदू भी अपनी इच्छाओ और आशीर्वाद हेतु दरगाह जाते है ।

उत्तर-17

नमक कर:- अंग्रेजो ने नमक पर अपना एकाधिकार स्थापित कर रखा था। भारतीयों को नमक बनाने पर प्रतिबन्ध था और अधिक दामों पर बेचा करते थे।

"महात्मा गाँधी जी द्वारा नमक कर को अन्य करों की तुलना में अधिक दमनात्मक समझना।"

- महात्मा गाँधी ने देखा कि नमक एक ऐसा पदार्थ है जिसका प्रयोग सभी घरों में होता है ऐसे में नमक कर को महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया।
- महात्मा गाँधी ने लॉर्ड इरविन के सामने अपनी माँगे रखी जिनमे नमक कर भी शामिल था। गाँधी जी की माँग थी कि समुद्र तट के किनारे रहने वाले लोगो को नमक बनाने दिया जाए।

लॉर्ड इरविन ने गाँधी जी की माँग को ठुकरा दिया।

- **गाँधी जी द्वारा उठाया गया कदम :-**

गाँधी जी ने 12 March 1930 को अपने साथियों के साथ साबरमती आश्रम से चलना शुरू किया और दांडी नामक स्थान पर पहुँचकर मुट्ठी भर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। 6 April 1930 को गाँधी जी अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचे और 240 km की यात्रा की और नमक कानून तोड़ा। गाँधी जी ने अनेक जगहों पर भी नमक यात्रा के लिए आदेश दिया। समांतर यात्राएँ आयोजित की गई।

परिणाम

1. गाँधी जी पर अमेरिका ने कवरेज कर दिया और दुनिया की नजर मे आ गए।

2. इस यात्रा मे महिलाओ ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

3. अंग्रेजो को आभास हो गया कि उनका राज अधिक दिन तक

नही टिकने वाला है ।

उत्तर-18

इस्तमरारी बंदोबस्त :-
इस्तमरारी बंदोबस्त को स्थायी बंदोबस्त भी कहा जाता है इसमे जमीदार ~~बिलौचे~~ बिचौलिए होते है और लगान निश्चित होता है ।

रैयतवाड़ी बंदोबस्त :-
रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे कंपनी और किसान का सीधा संबंध होता है इसमे जमींदार जैसे किसी ~~बिलौचिए~~ बिचौलिए की आवश्यकता नही होती है । रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे लगान निश्चित नही होता है । रैयत का अर्थ होता है किसान । अतः रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे सीधा संबंध रैयत से होता है ।

इस्तमरारी बंदोबस्त तथा रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे अंतर :-

आधार	इस्तमरारी बंदोबस्त	रैयतवाड़ी बंदोबस्त
1. स्थापना/लागू	इस्तमरारी बंदोबस्त की स्थापना 1793 मे हुई थी।	रैयतवाड़ी बंदोबस्त 1820 मे लागू किया गया था
2. संस्थापक	इसको लागू लॉर्ड कार्नवालिस ने किया था।	इसको लागू थॉमस मुनरो एवं रीड ने किया था।
3. मध्यस्थ स्थिति	इस्तमरारी बंदोबस्त मे जमींदार की मध्यस्थ की स्थिति थी।	रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नही थी।
4. संबंध	इस्तमरारी बंदोबस्त मे किसानो का कंपनी से कोई सीधा संबंध नही था।	रैयतवाड़ी बंदोबस्त मे किसानो का कंपनी से सीधा संबंध था।
5. लगान	इस व्यवस्था मे लगान निश्चित था।	इस व्यवस्था मे लगान निश्चित नही था।

उत्तर-17

संविधान सभा मे दमित जातियो के अधिकारो को लेकर बहस :-

भूमिका :-
दमित जातियो (SC, ST) को शुरू से ही दोयम दर्जे एवं निम्न दर्जे का समझा जाता था इन जातियो ने संविधान सभा मे अपने अधिकारो को लेकर मांग की और अनेक बहसे हुई जो इस प्रकार है -

1. दमित जातियो की सुरक्षा के लिए बहस :-
दमित जातियो को सुरक्षित रखने के लिए विशेष प्रावधानो का वर्णन किया जिसमे अनेक बहसे हुई। दमित जातियो को समाज की रेखा में लाने के लिए विशेष प्रावधान के विषय मे चर्चा हुई।

2. पृथक निर्वाचक मण्डल :-
डॉ भीम राव अम्बेडकर जी ने दमित जातियो के लिए पृथक निर्वाचक

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल) | इण्टरमीडिएट परीक्षा 'ब' (उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

मण्डल की माँग की परंतु गाँधी जी का कहना था कि पृथक निर्वाचन से दमित जाति समाज से कट जाएँगे जिस कारण इस मुद्दे पर भी अनेक बहसे हुई ।

3. **समाज के हाशिए पर रखने की बहस :-**

दमित जातियों का कहना है कि हमें सदैव समाज के हाशिए पर रखा गया है लोगों ने, समाज ने हमारी सेवाओं का तो आनन्द लिया है परंतु हमारे साथ घुलने - मिलने से कतराते हैं, इसीलिए संविधान सभा मे यह भी बहस का एक मुद्दा था ।

4. **आरक्षण संबंधी बहसे :-**

दमित जातियों का शिक्षण संस्थानों मे बहुत कम स्थान था इसीलिए उन्हें आरक्षण का प्रावधान देकर शिक्षण संस्थानों और नौकरियों मे उनकी मौजूदगी को बढ़ाया गया । आरक्षण संबंधी प्रावधानों पर भी अनेक बहसे हुई और अंत मे संवैधानिक प्रावधान किए गए ।

PTO →

5. **मंदिरो पर जाने पर रोक :-** दमित जातियों को मंदिरो मे जाने से रोका जाता था। दमितो का कहना है कि हमने समाज के लिए इतनी सेवा की है कि अब हमारे प्राणो व शरीर मे शक्ति नही रही है और हमे भगवान के घर अर्थात मंदिर मे जाने से रोका जाता है।

6. **अस्पृश्यता का अंत :-** अनुच्छेद 17 के तहत अस्पृश्यता का अंत किया गया क्योकि दमितो को अछूत समझा जाता था।

बहसो का समाधान

1. संविधान सभा ने दमितो के लिए आरक्षण की व्यवस्था की।

2. संविधान सभा ने मंदिर प्रवेश या किसी भी सार्वजनिक स्थल पर बिना किसी भेदभाव जाने की अनुमति दी।

3. अस्पृश्यता का अंत किया गया।

4. राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में इनके लिए विशेष प्रावधान रखे गए।

उत्तर - 20

"जमीन से मिलने वाला राजस्व मुगल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी"।

भूमिका :-

1526 में बाबर ने पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को हराकर मुगल साम्राज्य की स्थापना की। मुगल साम्राज्य में राज्य की आय का प्रमुख साधन राजस्व था। मुगल साम्राज्य में भू-राजस्व प्रणाली इस प्रकार है -

मुगलों की भू राजस्व प्रणाली

मुगलों की भू-राजस्व प्रणाली के कई चरण है जैसे -

1. **भूमि की माप :-**

मुगल काल में भूमि की सही माप के लिए रस्सी के स्थान पर जरीब का प्रयोग किया जाता था ताकि भूमि की सही

PTO →

माप हो और भू-राजस्व निर्धारित करने मे आसानी हो ।

2. **भूमि का वर्गीकरण :-** मुगल काल मे भू-राजस्व निर्धारित करते समय भूमि का चार भागों मे वर्गीकरण कर दिया जाता था जो इस प्रकार है -

- पोलाज - प्रत्येक वर्ष कृषि होती थी ।
- पड़ौती - 2-3 सालों से खेती नही हुई ।
- चाचर - 5 साल से खेती नही हुई ।
- बंजर - 5 से अधिक सालों से खेती नही हुई ।

3. **कर निर्धारण :-** भू-राजस्व प्रणाली में जमीनों के आधार पर कर का निर्धारण किया जाता था । अधिकतर 1/3 कर निर्धारित किया जाता था ।

4. **कर वसूली :-** कर की वसूली वर्ष मे दो बार की जाती थी एक बार गर्मीयो मे और एक

बार सदियों में ।

5. कर वसूली करने वाले अधिकारी

(i) आमिल - कर वसूलने वाला अधिकारी

(ii) कानूनगो - किसान व जमीन का लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी

(iii) पटवारी - कंपनी और कर का रिकॉर्ड रखने वाला अधिकारी

(iv) जमींदार - कर एकत्रित करने के लिए आवश्यक ।

6. पद्धतियाँ :-

भू राजस्व वसूल करने के लिए दहसाला पद्धति द्वारा किया जाता था जिसमें पिछले 10 वर्षों के आधार पर भू-राजस्व निर्धारित किया जाता है । अन्य प्रकार की भी बाद पद्धतियाँ थी जैसे -

- गल्ला
- बख्श
- नस्क
- जाब्ती

अतः इस प्रकार भू-राजस्व से जमीन से मिलने वाले राजस्व मुगल काल

P.T.O

की आर्थिक बुनियाद था'।

उत्तर-2।

मगध :-
मगध बिहार में गया और पटना के बीच स्थित है जो छठी शताब्दी ई॰ पूर्व में एक शक्तिशाली महाजनपद था। मगध पर अनेक राजवंशों का शासन रहा है। जो इस प्रकार है -

1. हर्यक वंश
2. शिशुनाग वंश
3. नन्द वंश

मगध एक शक्तिशाली राज्य के रूप में

कारण

- भौगोलिक स्थिति
- प्राकृतिक स्रोत
- आर्थिक स्थिति
- योग्य शासक
- शांति सुरक्षा

1. भौगोलिक स्थिति :- मगध की भौगोलिक स्थिति उसको एक महत्वपूर्ण राज्य बनाती है। मगध की दो राजधानियाँ है -

- राजग्रह
- पाटलीपुत्र

दोनों राजधानियाँ मे से राजग्रह पहाड़ियो से और पाटलीपुत्र नदियों से जिससे कोई दूसरा राज्य हमला करने से पहले सोचता है।

2. प्राकृतिक स्त्रोत :- मगध के पास लोहा अच्छी मात्रा मे उपलब्ध है और हाथी भी पाए जाते है जिससे सेना मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। लोहे से हथियार बनते है।

3. आर्थिक स्थिति :- मगध मे कृषि क्षेत्र उन्नत है जिससे शिक्षा, रोजगार मे महत्वपूर्ण स्थान है और कृषि क्षेत्र मे वृद्धि हेतु सिंचाई के साधन उपलब्ध है।

4. **योग्य शासक** :- अजातशत्रु, बिम्बीसार, उदयन जैसे योग्य शासक थे जिन्होंने साम्राज्य का विस्तार किया यह भी मगध की शक्तिशाली होने का एक कारण है।

5. **शांति और सुरक्षा** :- मगध में राजाओं ने और जैन, बौद्ध धर्मों के लोगों ने शांति, सुरक्षा को बनाए रखने के अनेक प्रयास किए जिससे शांति और सुरक्षा बनी रही।

अतः ये चीजें मगध को एक शक्तिशाली राज्य बनाती है।

उत्तर - 22

"1857 ई. की क्रांति भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।"

1857 की क्रांति 31 May 1857 को शुरू होनी थी परंतु अनेक कारणों से यह पहले ही 10 May 1857 को हो गई।

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'ब' (उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

सामाजिक कारण

1. अंग्रेजो ने सती प्रथा को समाप्त कर दिया था।
2. स्कूलो में ईसाई शिक्षा का प्रचार हो रहा था।
3. अंग्रेजो ने समुद्र पार की यात्रा अनिवार्य कर दी थी।
4. अंग्रेजो ने बाल विवाह पर भी प्रतिबंध लगा दिया था।

आर्थिक कारण

1. अंग्रेजो ने लगान की दरे ऊँची कर दी थी।
2. इंग्लैण्ड के सामान की माँग ज्यादा होने लगी थी।
3. अंग्रेजो के द्वारा किसानो का शोषण बढ़ गया था।
4. हस्तशिल्प उद्योग धन्धे ठप्प हो गए थे।

राजनीतिक कारण

1. नाना साहब की पेंशन बंद कर दी गई थी।

2. रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र को मान्य नहीं समझा।

3. सहायक संधि के तहत अनेक राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया था।

4. लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति के तहत अनेक राज्यों को अपने राज्य में मिलाना।

तात्कालिक कारण

गाय और सुअर के माँस के एनफील्ड कारतूसों को जब मुंह से तोड़ने को कहा तो लोग भड़क उठे क्योंकि गाय हिंदुओं के लिए पवित्र और सुअर मुसलमानों के लिए अपवित्र है जिससे दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाता इसीलिए यह तत्कालिक कारण बना 1857 की क्रांति का।

निष्कर्ष :-

समय से पहले क्रांति होने का यही कारण था गाय और सुअर के मांस की चर्बीयुक्त कारतूस ।

उत्तर - 23

हड़प्पा सभ्यता :-

हड़प्पा सभ्यता विश्व की सबसे पुरानी नगरीकृत सभ्यता है इसकी खोज 1921 में रखालदास बनर्जी ने की थी । यह मनके बनाने के संबंध में प्रसिद्ध है। शिल्प उत्पादन में कच्चे माल की सूची इस प्रकार है -

1. जैस्फर
2. स्फाटिक
3. सेलखड़ी
4. तांबा
5. फ्यॉन्स
6. सोना
7. चाँदी
8. मूँगा
9. पन्ना
10. टीन आदि

कच्चा माल प्राप्त करने के तरीके :-

1. आभियान चलाना :- हड़प्पा वासी कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अनेक जगहों आभियान चलाते थे जैसे राजस्थान के खेतड़ी अंचल में तांबे प्राप्त करने के लिए आभियान चलाते थे ।

2. बास्तियाँ स्थापित करना :- कच्चा माल प्राप्त करने के लिए नागेश्वर बालाकोट जैसी जगहों पर बास्तियाँ स्थापित करते थे बास्ति शंख प्राप्त करने के लिए स्थापित की गई थी ।

3. सुदूर क्षेत्रों में संपर्क बनाना :- ओमान, दक्षिण भारत, अफगानिस्तान आदि स्थानों से संपर्क बनाते थे और कच्चा माल प्राप्त करते थे जैसे सोना, चांद चाँदी आदि ।

4. स्थानीय उपलब्धता :-

मिट्टी, लकड़ी, कपास स्थानीय तौर पर उपलब्ध हो जाती थी मिट्टी हड़प्पा-वासी आस-पास के क्षेत्रों से मंगवा लिया करते थे।

5. संबंध स्थापित :-

हड़प्पावासी के अनेक क्षेत्रों में व्यापारिक संबंध थे इससे भी शिल्प उत्पादन हेतु कच्चा माल प्राप्त किया जाता था।

उत्तर-24

(i) कृष्णदेव राय द्वारा विजयनगर में जलाशय बनवाया गया अपनी राज सत्ता स्थापित करने के लिए।

(ii) जलाशयों का निर्माण जल एक झील से लाया जाता है जो हलकाव से खुद एक छोटी नदी में मिलती है।

(iii) भग्नावशेषों के बीच बनायी गयी सबसे प्रमुख जल संरचना में जलाशय में तीन विशाल स्तंभ बने है जिन पर खुबसूरती से चित्र उकेरे गए है से ऊपरी भाग में कुछ

पाइपों से जुड़े हुए है।

(iv) पेस के अनुसार जलाशय में 15 से 20 हजार लोगों को कार्य करते देखा गया है।

अनुक्रमांक - 26312688

उत्तर - 8

<u>बहि विवाह</u> :- ऐसा विवाह जिसमें गोत्र के बाहर विवाह होता है उसे बहि विवाह कहा जाता है। इसमें जाति समान नही होती है इसमें जाति के बाहर विवाह होता है। अपने समूह से बाहर विवाह करना।

अनुक्रमांक

2026

410 (IRF)

प्रश्न संख्या 25 के लिए
(For Q. No. 25)

रोल नं.
Roll No. ________

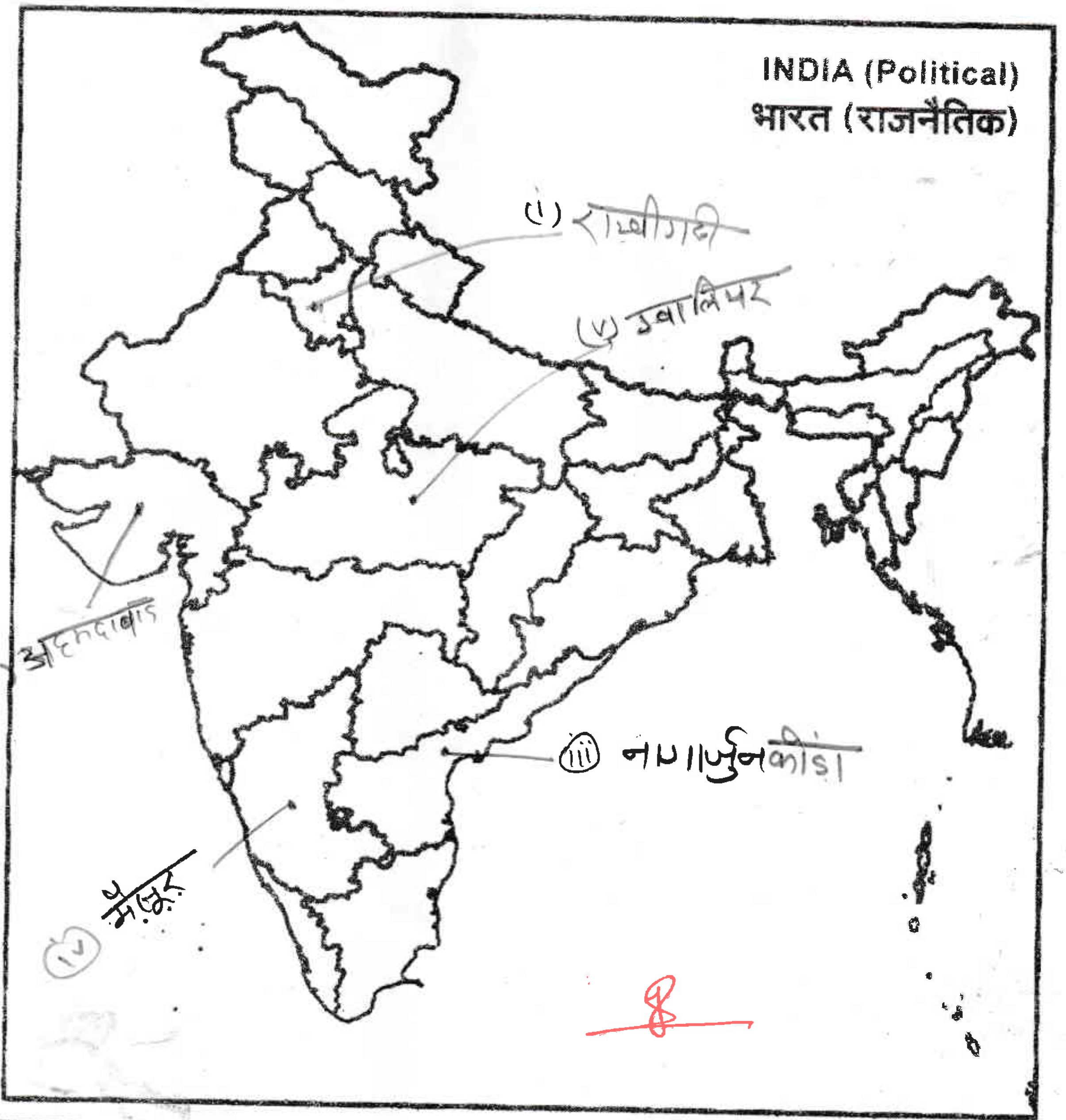

केवल परीक्षकों के लिए (For Examiners Only)	प्रश्न संख्या 25 (Q. No. 25)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	योग Total
	प्रदत्त अंक (Marks Provided)						

उत्तर – 25

(i) राखीगढ़ी – हरियाणा
(ii) अहमदाबाद – गुजरात
(iii) नागार्जुनकोंडा – आंध्रप्रदेश
(iv) मैसूर – कर्नाटक
(v) ग्वालियर – मध्यप्रदेश